DR.PUNAM THAKUR, ASST. PROFESSOR

THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN JAMSHEDPUR

B. Ed DEPARTMENT

SUBJECT :- PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT SOCIAL SCIENCE

(HISTORY)

SEMESTER-II , PAPER-VII A,

TOPIC- IMPORTANCE OF HISTORY IN THE SCHOOL CURRICULUM

Scanned with CamScanner

विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्त्व
(IMPORTANCE OF HISTORY IN SCHOOL-CURRICULUM)

विद्यालय-पाठ्यक्रम में इतिहास के महत्त्व को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विचारकों एवं लेखकों के मतों को आगे दिया जा रहा है–

Scanned with CamScanner

(अ) के. पी. चौधरी (K.P. Chaudhary) **का मत**—इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्त्पूर्ण विषय माना गया है। यह **समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है।** यद्यपि इतिहास अधिकांशतः अतीत से सम्बन्धित है, परन्तु यह वर्तमान पर भी बल देता है, जिससे आज के समाज का अतीत के प्रकाश में अध्ययन किया जा सके। इस प्रकार इतिहास उस सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डालता है, जिसमें बालक रहता और जीवन-यापन करता है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया जाता है।

(1) अतीत के लिए प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यक—हमारे देश के नवयुवकों में एक प्रवृत्ति घर कर गई है कि वे अपने अतीत को तुच्छ मानते हैं और उसको घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इस कारण वे उसे समझने के योग्य नहीं मानते। उनके हृदयों में ऐसी प्रवृत्ति दृढ़ हो जाने का प्रमुख कारण पाश्चात्य प्रणाली के अनुसार शिक्षित होना है। परन्तु भारतीय इतिहास के अध्ययन से उन्हें उनके अतीत से अवगत कराया जाना चाहिए तथा उन्हें इस योग्य बनाया जाना चाहिए जिससे वे अपने अतीत का वर्तमान की दृष्टि से विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकें। इससे उनके हृदय में अपने अतीत के लिए प्रेम एवं गौरव-भावना उत्पन्न हो सके। अतः देश के प्रति प्रेम जाग्रत करने हेतु इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान देना आवश्यक है।

(2) भारतीय जीवन के ढंग से अवगत कराने के लिए आवश्यक—इतिहास का अध्ययन भारतीय विद्यालयों में अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि उसके अध्ययन से बालक 'भारतीय जीवन के ढंग' (Indian way of life) के विकास को समझने में समर्थ हो सकेंगे। जीवन के ढंग को समझकर सामाजिक एकता को स्थापित किया जा सकता है। इसके ज्ञान से जाति, धर्म, भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावात्मक एकता का विकास किया जा सकता है।

(3) सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु—इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान में बहुत सहायक होता है। इस प्रकार के अध्ययन से भाषा तथा साम्प्रदायिक सम्बन्धों को दृढ़ एवं मधुर बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से भी इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।

(ब) ग्राण्ट रॉबर्टसन (Grant Robertson) **का मत**—**"इतिहास द्वारा छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है, जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं।"** इसके द्वारा बालकों को पथ-प्रदर्शित किया जाता है। इसके द्वारा छात्रों की जिज्ञासा को सन्तुष्ट किया जाता है। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों, व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इससे वे अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

(स) **के. डी. घोष** (K.D. Ghosh) **का मत**—**"इतिहास द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो कि विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है।"** इसमें सन्देह नहीं कि इतिहास में बालकों को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है। बालक को जो कुछ वह इतिहास में पढ़ता है, उनको स्मरण रखने के लिए स्मरण-शक्ति का उपयोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों, संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है, तब उसकी कल्पना-शक्ति को विकसित होने के बहुत से अवसर प्राप्त होते हैं। इन सबसे प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इन तथ्यों को वह तार्किक रूप से नियोजित करना जाना जाता है। इसके अतिरिक्त जब वह ऐतिहासिक चरित्रों के विषय में अध्ययन करता है तब उसकी निर्णय शक्ति का विकास पर्याप्त रूप से होता है। घोष महोदय ने अपने कथन की पुष्टि हैपोल्ड के इन शब्दों से की है—**"बालक इतिहास के अध्ययन से बहुत-से धार्मिक, राजनैतिक या सामाजिक विवादास्पद प्रश्नों तथा समस्याओं के विषय में अपना मस्तिष्क स्थिर करना सीख जाता है, अर्थात उनको सुलझाने की उसमें क्षमता विकसित हो जाती है।"**

"He has also to make up his mind about religious, political or social questions of controversial kind to generalize, so far as he can, about wide sweeps of time through study in comparison and contrast to weigh evidence and from existing data to arrive at coclusion legitimately supported by such data."

—F.C. Happold :

Quoted by K.D. Ghosh in *'Creative Teaching of History'*, p. 11.

इस प्रकार इतिहास द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार का मानसिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिसके द्वारा बालक अपने जीवन की प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सफल होता है। इस दृष्टिकोण से उसमें तथ्यों के संकलन, उनके परीक्षण एवं उनके आधार पर अपना निष्पक्ष निर्णय देने की योग्यता आ जाती है। इस प्रकार वह सत्य की खोज का प्रेमी बन जाता है।

इतिहास बालक के **मानसिक अन्तरिक्ष** (Mental Horizon) को विस्तृत करता है, जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे उसमें सत्य, देश-प्रेम के साथ-साथ विश्व-बन्धुत्व की भावना भी विकसित होती है।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि **मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ।** उसका यह कार्य नहीं कि वह राजाओं, रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों के विषयों में ही विवरण प्रस्तुत करे। वह अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विशद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्व कार्य है। हम तभी अपना सुखमय जीवन

Scanned with CamScanner

व्यतीत कर सकते हैं जबकि हम अपने जीवन की सम-सामयिक समस्याओं को पूर्ण रूप से समझ सकें। इन समस्याओं को समझने एवं सुलझाने में इतिहास हमारी सहायता करता है। इतिहास-शिक्षा की हम इसलिए ही व्यवस्था करते हैं। इसके अतिरिक्त उसका कार्य एक पग और आगे है वह यह है कि उसके द्वारा बालकों में भविष्य के सम्बन्ध में सोचने की प्रवृत्ति जाग्रत की जाती है।

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास का महत्त्व
(IMPORTANCE OF HISTORY FROM NATIONAL OUTLOOK)

भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्त्वपूर्ण माँग है, जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। आज भारत में जिसकी सर्वाधिक आवश्यकता है वह भावात्मक एकता ही है, जिसके फलस्वरूप आन्तरिक कलह एवं संघर्ष देश की प्रगति पर घातक प्रभाव न डाल सकें। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। इसके अध्ययन से बालकों में विभिन्न अवधारणाएँ (Concepts) विकसित की जा सकती हैं, जो भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के लिए आधारशिला का कार्य करेंगी। वे अवधारणाएँ निम्नलिखित हैं—

1. विभिन्न समुदायों तथा अल्पसंख्यकों के योगदान का सम्मान करना।
2. अपनी संस्कृति में निहित एकता को परखना।
3. बालकों को इस सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कराना कि देश में जो भी उन्नति हुई, वह विभिन्न जातियों एवं समुदायों के लोगों के परस्पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का ही परिणाम है।
4. छात्रों को अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना और इस बात को परखने के लिए तत्पर बनाना कि वे एकीकृत संस्कृति के अधिकारी हैं।
5. राष्ट्रीय संस्कृति के लिए जिन लोगों ने योगदान किया है—चाहे वे विभिन्न क्षेत्रों के क्यों न हों उनको आदर प्रदान करना।
6. बालकों में विभिन्न वातावरणों की अन्योन्याश्रितता को समझने की चेतना का विकास करना।

जीवन में इतिहास की उपादेयता
(UTILITY OF HISTORY IN LIFE)

सामान्यतः लोग यह पूछते हैं कि वास्तविक जीवन में इतिहास की क्या उपयोगिता है ? इस प्रकार का प्रश्न पूछने में उनका अभिप्राय यह है कि क्या बालक इतिहास के अध्ययन से भविष्य में अपना जीवन-निर्वाह कर सकता है। यह सत्य है कि इतिहास गणित, विज्ञान जैसे विषयों की भाँति जीवन-निर्वाह में प्रत्यक्ष रूप से सहायता नहीं करता है। परन्तु यहाँ स्वतः ही यह प्रश्न उठता है कि क्या

Scanned with CamScanner

शिक्षा प्राप्ति का एकमात्र उद्देश्य जीविका-प्राप्ति ही है ? यदि मान भी लिया जाए कि जीविका निर्वाह ही सर्वस्व है तो हम कह सकते हें कि इतिहास भी अन्य विषयों की भाँति बालकों को अपने पैरों पर खड़ा होने के योग्य बना सकता है। मानव-जीवन के कुछ ऐसे कार्य-क्षेत्र हैं, जिनमें इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। उदाहरणार्थ— शिक्षण, उच्च शासकीय सेवाएँ, पत्रकारिता, विशेष विभाग के कर्मचारियों हेतु कूटनीतिज्ञता आदि। यदि सरकारी कर्मचारी जनता के सेवक हैं तो उन्हें जन-जीवन की विविध गतिविधियों से परिचित होना आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में वे सफल-सेवक नहीं बन सकते। इन गतिविधियों की जानकारी के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है।

यदि हम अपनी वर्तमानकालीन सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं का समाधान चाहते हैं, तो सभ्यता के विकास की दृष्टि से भौतिक-विज्ञान विशेष रूप से सहायक नहीं हो सकेंगे। इनके समाधान के लिए मानव को मानव के स्वरूप को पहचानना पड़ेगा और मानव के स्वरूप को पहचानने में इतिहास हमारी पर्याप्त सहायता करता है। इसके अतिरिक्त मानव के स्वरूप को पहचानने के परिणामस्वरूप ही मनुष्य अपना सच्चा विकास कर सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि सफल जीवन के लिए इतिहास का अपना एक विशेष महत्त्व है और यही उसकी जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण उपादेयता है।

Scanned with CamScanner